सृष्टि का नियम संतुलन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

संतुलन का अर्थ है–बैलेंस को बनाये रखना। पृथ्वी अपनी धुरी पर चक्कर लगाती है। सूर्य सदैव पूर्व में उदित होता है और पश्चिम में अस्त होता है। दिन और रात का क्रम चलता रहता है। ऋतुएं अपने समय के अनुसार आती–जाती रहती है। नदी, पहाड़, झरने ये सब मिलकर सृष्टि के संतुलन को बनाये रखते हैं। ग्रहों और उपग्रहों का अपने पथ पर चक्कर लगाना सृष्टि के संतुलन को बतलाता है। यदि इन सबमें थोड़ा सा भी हेर–फेर हो जाए तो सृष्टि का विनाश अवश्यम्भावी है। आजकल देखा यह जाता है कि मानव प्रकृति के साथ हस्तक्षेप कर रहा है। प्रकृति के साथ हस्तक्षेप उसके विनाश के लिए है। नयी–नयी बीमारियों और महामारियों का प्रकोप इसका साक्षात प्रमाण है। कोरोना जैसी महामारी पूरे विश्व को अपने चपेट में लेकर यह संदेश दे रही है कि प्रकृति के आगे मानव बौना है। विज्ञान की प्रगति के बाद भी अभी तक इस महामारी की कोई औषधि नहीं खोजी जा सकी है। इसलिए मानव के हित में है कि वह प्रकृति में हस्तक्षेप न करें।

संतुलन का अर्थ है– मेलजोल से रहना, अनुशासन से रहना, विषम परिस्थितियों में धैर्य धारण करना और अनेकता में एकता को ढूँढ लेना संतुलन है। संतुलन से समन्वय बना रहता है। समन्वय में प्रगति निहित है। सर्वजन सुखाय और सर्वजन हिताय की भावना समन्वय में निहित है। समन्वय जीवन विकास का सूत्र है। प्रत्येक परिस्थिति में हर जगह अपने को मिला लेना समन्वय कहलता है। जो व्यक्ति इस कला को जानता है, जीवन में उसकी हार नहीं होती। मानव परिवार से लेकर राष्ट्र तक अपने सम्बन्धों को बनाता है। परिवार में अनेक सदस्य होते हैं। सब की रुचि और सबका मिजाज अलग–अलग होता है। कोई उग्र स्वभाव का होता है तो कोई नम्र स्वभाव का। सभी को एक साथ रहने के लिए तालमेल बैठाना आवश्यक होता है।

परिवार में समन्वय करने के लिए बड़ों का सम्मान करना पड़ता है। बड़ों का भी यह कर्त्तव्य है कि वे छोटों को आदर दे और उनके प्रति स्नेह का भाव रखे। जहां आवश्यक हो उन्हें सुझाव देकर अपनी बात को उनके सामने रखे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानव को एक दूसरे के साथ तालमेल बैठाना होता है। यह शिक्षा परिवार से ही प्रारंभ होती है। परिवार को नागरिकता की प्रथम पाठशाला कहा जाता है। बालक को माता–पिता और अन्य पारिवारिकजन जो कुछ भी शिक्षा देते हैं उसी के अनुरूप बालक के चरित्र का निर्माण होता है। शिक्षा, खेल एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र के साथ सम्बन्ध समन्वय के हिसाब से ही होता है।

जब बच्चा विद्यालय में पढ़ने के लिए जाता है तो वहां अनेक वस्तुओं से उसका सम्पर्क होता है। धीरे–धीरे बच्चा सभी के साथ समन्वय करके रहना सीखता है और पढ़ना सीखता है। धीरे–धीरे यह भावना और आगे बढ़ती है और वह सबके साथ घुल–मिल जाता है। कोई भी खेल हो जब उस खेल को टीम भावना से खेला जाता है तो वियजश्री अवश्य मिलती है। यदि खिलाड़ियों तालमेल न हो तो खेल को जीतना बड़ा मुश्किल हो जायेगा। क्रिकेट के मैच में दो देश जब आमने–सामने प्रतिद्वन्द्वी के रूप में क्रिकेट खेलते हैं तो हर दल को बहुत ही समन्वय करना पड़ता है। इसी प्रकार सभी खेलों में इस भावना का होना आवश्यक है। समन्वयके बढ़ने से दृष्टिकोण विधेयात्मक बनता है और जिस व्यक्ति का विधेयात्मक दृष्टिकोण रहता है वहीं आगे बढ़ता है।

महाभारत के प्रसंग में देखा जाये तो भगवान श्रीकृष्ण ने कौरव और पाण्डव दोनों पक्षों में समन्वय और संतुलन कराने का बहुत प्रयास किया। किन्तु दुर्योधन के निषेधात्मक दृष्टिकोण के कारण यह संभव न हो सका। इसका परिणाम यह हुआ कि युद्ध अवश्यंभावी हो गया और इस युद्ध का परिणाम सबके सामने है। फलतः कौरवों का विनाश हुआ। निषेधात्मक दृष्टिकोण विनाश को बुलावा देता है और रचनात्मक दृष्टिकोण उन्नति प्रदान करता है। महान् व्यक्तियों का व्यक्तित्व सदैव रचनात्मक होता है। वे विवाद नहीं करना चाहते। यदि कोई उन्हें अपशब्द भी कह दे तो वे उसका प्रतिकार नहीं करते।

प्रकृति पंचभूतात्मक है। यदि पांचों तत्व आपस में न मिले तो सृष्टि का बनना असंभव है, किन्तु ऐसा होता नहीं। जैसा समन्वय प्रकृति में है यदि वैसा ही हर जगह हो तो कही विवाद

नहीं होगा। पांचो तत्वों के समन्वय का परिणाम है यह भौतिक संसार। सभी तत्व सभी तत्वों में मिले हुए है। जिसकी जितनी मात्रा होनी चाहिए उसी के अनुसार उनका मिश्रण हो जाता है और प्रकृति में तालमेल बना रहता है।

मानव प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करके प्रकृति के स्वरूप को विकृत कर रहा है। जिसका परिणाम है प्रकृति का प्रकोप। कही पर अतिवृष्टि हो रही है तो कहीं पर अनावृष्टि। कहीं पर सुनामी आ रही है तो कहीं पर भूकम्प। ऐसा इसलिए हो रहा है कि मानव प्रकृति के साथ तालमेल बैठाकर नहीं चल रहा है। मानव आवश्यकता से अधिक प्रकृति का दोहन कर रहा है। इच्छाएं आकाश के समान अनन्त होती है। सभी इच्छाओं को पूर्ण नहीं किया जा सकता।